आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 27-02-2016 ● अंक-447 ● तारीख - 28 फरवरी 2016, फाल्गुन कृष्ण - 5 ● रविवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसांई -अनमोल वचन

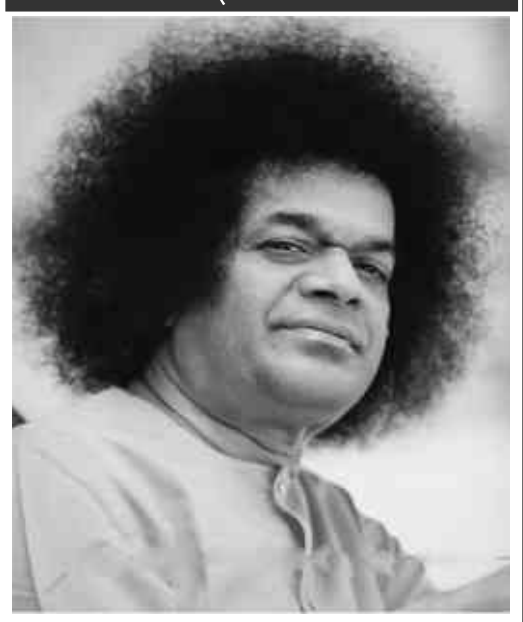

दूसरों के गुण और अपने दोष सदा ढूँढते रहो।

ऐसी लागी लगन, मीरा हो गयी मगन
(भजन)

ऐसी लागी लगन, मीरां हो गई मगन,
वो तो गली-गली हरि गुण गाने लगी-2
महलों में पली, बन के जोगन चली,
मीरां रानी दीवानी कहलाने लगी-2

ऐसी लागी लगन-2
कोई रोके नहीं, कोई टोके नहीं
मीरां गोविन्द गोपाल गाने लगी-2
बैठी संतो के संग, रंगी मोहन के रंग
मीरां प्रेमी प्रीतम को मनाने लगी-2

वो तो गली-गली हरिगुण.....
राणा ने विष दिया, मानो अमृत पिया
मीरां सागर में सरिता समाने लगी-2
दुःख लाखों सहे, मुख से गोविन्द कहे
मीरां गोविन्द गोपाल गाने लगी-2
वो तो गली-गली हरिगुण.....

कला जीवन जीने की

हृदय

बन्द मुट्ठी आकार तिकोना,
माँसपेशी का अवयव है।
सेन्टिमीटर दस लम्बा होता,
हृदय हमारा अद्भुत है।
दौ सो पच्चीस ग्राम वजन का,
महिलाओं में होता है ।
पुरुषों में कुछ अधिक वजन का,
हृदय देह में रहता है ।

सुविचार

डूबता है तो पानी को दोष देता है
गिरता है तो पत्थर को दोष देता है
इंसान भी बड़ा अजीब है।
कुछ नहीं कर पाता है तो
किस्मत को दोष देता है।

अब ट्रेन यात्रियों का गुलाब से स्वागत करेंगी होस्टेस

जरा सोचिये कि आप किसी ऐसी ट्रेन में सफर कर रहे हों, जहां धीमे संगीत के बीच कोई होस्टेस आपको गुलाब का फूल दे। यह कल्पना अब सच्चाई में बदलने जा रही है क्योंकि रेलवे ने जल्द शुरू की जाने वाली दिल्ली-आगरा गतिमान एक्सप्रेस सेवा में ट्रेन होस्टेस तैनात करने का फैसला किया है।

रेल मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक हम विमान की तरह अच्छी सेवा देने का प्रयास कर रहे हैं। विमान की तरह गतिमान में ट्रेन होस्टेस होंगी और इसमें केटरिंग सर्विस भी एयरलाइंस की तरह होगी।

रेलवे के सूत्रों के अनुसार गतिमान एक्सप्रेस में हाई-पावर इमरजेंसी ब्रेक, ऑटोमैटिक फायर अलार्म, जीपीएस आधारित पैसेंजर इंफॉर्मेशन सिस्टम और कोच में स्लाइडिंग दरवाजे जैसी सुविधाएं होंगी। इंफोटेनमेंट के लिए ट्रेन में लाइव टीवी सर्विस

उपलब्ध कराई जाएगी।

गतिमान एक्सप्रेस का किराया शताब्दी एक्सप्रेस से 25 फीसदी अधिक होगा। गतिमान एक्सप्रेस के चेयर कार एसी का किराया 690 रुपए होगा, जबकि एग्जीक्युटिव क्लास के लिए प्रति यात्री 1365 रुपए का खर्च आएगा। जबकि दिल्ली-आगरा शताब्दी की चेयर कार का किराया 540 रुपए और एग्जीक्युटिव क्लास का 1040 रुपए है।

गतिमान एक्सप्रेस में भारतीय और महाद्वीपीय व्यंजन मिलेंगे। इसके मेन्यू में गेहूं का उपमा, मिनी डोसा, कांजीवरम इडली, फ्रेश फ्रूट्स, स्विस रोल के साथ आलू कुलचा, रोस्टेड ड्राई फ्रूट्स और रोल सर्व किया जाएगा। चिकेन सॉस के साथ स्पेनिश एग ऑमलेट और अखरोट स्लाइस केक बोन चाइना क्रॉकरी में सर्व किए जाएंगे।

फल ही नहीं औषधि भी है जामुन

फल ही नहीं, औषधि भी है जामुन क्योंकि इसका प्रयोग दवा के रूप में भी किया जाता है।

मधुमेहः

जामुन का सिरका, ताजा पका फल, जामुन का रस या गुठली का प्रयोग मधुमेह रोग में किया जाता है। जामुन की गुठलियों में पाया जाने वाला जम्बोलीन नामक तत्व स्टार्च को शुगर में परिवर्तित होने से रोकता है, जिससे रक्त में शुगर की मात्रा नहीं बढ़ पाती। जामुन की गुठली का चूर्ण 3-3 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन दो-तीन बार लेने से मधुमेह में पूरा लाभ मिलता है।

अधिक मूत्र आनाः

जामुन की गुठली का चूर्ण 1-2 चम्मच की मात्रा में सुबह शाम पानी के साथ लेने से अधिक मूत्र आने की समस्या में लाभ मिलता है और धीरे-धीरे मूत्र की मात्रा सामान्य हो जाती है।

दस्त और पेचिश :जामुन की गुठली का चूर्ण 1-2 चम्मच की मात्रा में मट्ठे के साथ दिन में दो-तीन बार लें। दस्त और पेचिश में लाभ मिल जाए तो यह प्रयोग बंद कर दें।

मनन करें जीवन का

फुरसत के क्षणों में हम जीवन-जगत के बारे में मनन करें। मनन स्वयं मार्ग देता है। बुद्धि का वास्तविक परिणाम पठन से नहीं, मनन से आता है। बुद्धि को मनन का मार्ग मिल जाए, तो बुद्धि हमारे सामने समाधानों का सूरज उगा देगी। जीवन की हर समस्या का समाधान व्यक्ति की बुद्धि और उसकी अंतर्रात्मा में समाया है। हम जीवन के व्यावहारिक पहलुओं पर तो मनन करे ही, जीवन-जगत के आंतरिक पहलुओं पर भी मनन करें। मैं कौन हूँ? मैं जगत में कहां से आया हूँ? मेरे जीवन का मूल स्त्रोत क्या है? मेरी चेतना कहां उलझी है? अपने स्वभाव की सौम्यता के लिए मुझे क्या करना चाहिए? ये वे पहलू हैं, जिन पर किया गया मनन हमें जीवन की गहराई देगा।

महत्व इस बात का नहीं है कि हम कितने वर्ष जीएं, वरन् इसका है कि हम कितने गहरे उतरकर जीएं। बंध्या का जीवन क्या जीना, अपनी समझ को पैदा करके जीएं। सहजतया कहे गए ये तीन सूत्र हमें गहराई देंगे। जीने की कला प्रदान करें। हम जीवन और जगत को पढ़े, समझें और पिंजरे से मुक्त हो चुके पंछी की तरह मुक्त उड़ान भरें।

श्री गणेश स्तुति

सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणाधिपः।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
दवादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।
विदयारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

दोहावली

रहिमन कबहुँ बड़ेन के, नाहिं गरब को लेस।
भार धरे संसार को, तऊ कहावत सेस।।

बड़े और महान् लोगों में गर्व एवं अहंकार नाममात्र को नहीं होता। उनका निरभिमानी जीवन लोगों के लिए अनुकरणीय होता है। जैसे शेषनाग पूरी पृथ्वी को फनों पर धारण किए हैं, फिर भी 'शेष' अर्थात् नगण्य कहलाते हैं। इससे उनका मान या पद घट नहीं जाता।

मानव मन के बोल

जब मैं कलकत्ता गया

गतांक से आगे.....

बाबूड़ा जी विद्यासागर जी। आपका हाथ ऊंचा कर रहे हो पूछो-पूछो.....विद्यासागर जी को बहुत उत्सुकता रहती है।

कलकत्ता पहुंचे तो आपको कैसा लगा? अच्छा लगा! महानगर के बारे में पहले भी सुना था। मैं जब छोटा था तो भिलाई का इस्पात कारखाना, भोपाल का इस्पात कारखाना, सेल, कलकत्ता में हावड़ा, ये बहुत मुझे जानकारी थी। उस समय मैंने देखा नहीं था, पर पढा बहुत था भाखड़ा नांगल बाँध डैम, तब तो लाल बहादुर शास्त्री जी के भाषण सुना करते थे रेडियो पर।

पाकिस्तान ने अटैक किया, लाल बहादुर शास्त्री जी ने, कहा बन्दूक का जवाब बन्दूक से दिया जायेगा। भारत को कमजोर समझने की कोई हिम्मत ना करे, भारत कमजोर नहीं है। हमारे देश की तरफ हाथ बढाया तो बाल उखाड़ देंगे, हमारे जवानों ने पाकिस्तान को नाकों चने चबाये। एक बार नहीं तीन-तीन बार.....

भारत पहले भी विश्व गुरू था, आज भी विश्व गुरू है और कल भी विश्व गुरू रहेगा। पाणिनी जी के मित्र थे, उन्होंने इतनी अच्छी व्याकरण लिखी थी और जब उन्होंने सुने? तो पाणिनी जी के आंखों में आँसूं आ गये। उनके मित्र ने पूछा-मित्र आप की आंखो में आंसू क्यों?बोले मित्र! बन्धु मैंने भी एक व्याकरण लिखी है। मेरे मन में आया था कि मेरे नाम से व्याकरण पूरी दुनिया में प्रसिद्ध होगी, लेकिन आपकी व्याकरण के सामने मेरी व्याकरण तो कुछ भी नहीं है। मित्र : कोई बात नहीं आप की व्याकरण सर्वश्रेष्ठ रहे, पर यह मेरे मन में आया इसलिये मेरी आंखों में आंसू आ गये।

चार दिन बाद उनके मित्र ने कहा, आओ जल बिहार करने नौका पर चलते हैं उनके मित्र ने जल विहार करते हुए कि अपनी व्याकरण को जल समाधि देना प्रारम्भ कर दिया। पत्तों को निकाल कर जल में, पाणिनी जी ने हाथ पकड़ा, मित्र ये क्या कर रहे हो, पाणिनी प्रसिद्ध हो।

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

मनुष्य बहुत कुछ कामनाएँ रखता है। यह चाहिए, वह चाहिए पर जो कुछ वह चाहता है, उसमें से कितना पूरा होता है? शायद नहीं के बराबर। जो चाहें सो पाएं वाली बात इसी कारण आश्चर्यजनक लग सकती है। भला यह कैसे संभव है? हम जो चाहें सो पाएँ–कैसे हो सकता है? अधिकांश इस पर विश्वास ही न करें, पर दुनिया के एक नहीं लाखों दृष्टांत इस बात के प्रमाण हैं कि जो चाहा, सो पाया....... आखिर कैसे ? कोई चमत्कार या जादू के बल पर नहीं, वरन् अपने अन्तःकरण की शक्ति के बल पर पाया। भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा करने वाले लोगों को चिंतकों और मानव ज्ञान शास्त्रियों ने निकम्मा और मूर्ख माना है। भाग्य और अवसर नाम की कोई चीज नहीं होती है। 'जब भाग्य होगा, अपने आप काम हो जाएगा' या अभी अवसर कहाँ आया है'। अवसर आते ही सारा काम बन जाता है। इस तरह की भावनाएँ केवल अपनी असफलता पर परदा डालने की कोशिश है। इस तरह हम अपनी कमजोरियाँ छिपाते हैं। वास्तव में भाग्य और अवसर नाम की कोई चीज नहीं है। यह केवल मन का वहम मात्र है। कोई भी कार्य करने का अवसर या भाग्य देखना निहायत बेतुकी बात है। जो कर्मयोगी हैं, वह कभी इसकी प्रतीक्षा नहीं करते। धन कुबेर रॉकफैलर का कथन था, 'मैंने कभी भाग्य और अवसर की प्रतीक्षा नहीं की, जब भी काम की बात मन में आई, शुरु कर दिया। मैंने अपने जीवन में प्रत्येक क्षण को ही भाग्य और अवसर माना है।' अतएव भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा करना अपनी सफलता को पीछे फेंक देना है। हो सकता है कि जब तक इतना समय निकल जाए कि आप करने पर भी न पा सकें। यदा–कदा भाग्य के फेर में भी मनुष्य अपने जीवन को दुःख से भर लेता है। अतएव भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा न कर आप अपना कार्य शुरू कर दें। दूसरों को देखें – लोग उनकी प्रशंसा करते हैं–'कितना भाग्यशाली है अमुक–' 'अमुक का सितारा बड़ा बुलंद है' –पर क्या 'अमुक' के जीवन में झांकने की कोशिश की, कि 'अमुक' आज जिस शिखर पर है, उस तक पहुंचने के लिए 'अमुक' ने कितना कठोर परिश्रम किया है? अमुक ने क्या–क्या संकट नहीं बर्दाश्त किए? यह तो 'अमुक' का दिल जानता होगा कि वह कैसे उस स्थान तक आया है? दूसरों का सुख, वैभव देखकर आपको ईर्ष्या होती है, पर उस सुख को भोगने वाले दिलों से पूछिए कि कैसे पाया है यह सब ?........ .... और अपने आपको बनाए रखने के लिए उनको अभी भी क्या–क्या करना पड़ रहा है ? अतएव जब तक आप इस महत्व को नहीं जानेंगे और केवल 'अवसर', 'भाग्य' की राह देखते रहेंगे, तब तक आप कुछ नहीं कर सकते हैं।

ऐसा करूँगा (प्रसंग)

बाल गंगाधर तिलक अपने साथियों के साथ छात्रावास की छत पर बैठे गपशप कर रहे थे। तभी साथियों के सामने यह सवाल आया कि यदि अचानक किसी पर संकट आ जाए, तो उसकी रक्षा के लिए नीचे जल्दी से जल्दी जाने के लिए कौन, कैसे जाएगा ? पहला लड़का बोला, ''मैं सीढ़ियों से दौड़ता हुआ निकल जाऊँगा।'' दूसरे ने कहा ''मैं रस्सी लगाकर नीचे उतर जाऊँगा।'' एक ने पूछा ''तिलक, तुम संकट की घड़ी में क्या करोगे? बाल गंगाधर तिलक ने अपनी धोती कसी और बड़ी सावधानी और कुशलता से ''मैं ऐसा करूँगा,'' कहकर नीचे छलाँग लगा ली। यही बालक आगे चलकर अपने साहसी गुणों के कारण लोकमान्य के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

भय का भूत सबसे बड़ा भूत

तुम खुश हो रहे हो! तुम्हारे जैसा बेवकूफ नहीं देखा, और हाँ, अगर फिर भी निंदा सुनने का शौक है तो एक काम करिए–अपने कान में ऊपर के हिस्से में डस्ट बीन और नीचे प्लीज यूज मी लिखवा लीजिए। दुनिया में जो बड़े पाप हो रहे हैं उन्हें कौन कर रहा है? भूखे पेट का आदमी? नहीं। खाली पेट का आदमी तो पेट भरने जितना ही पाप करता है। लेकिन यह जो भरे पेट का आदमी है ना वह पेटी और कोठी भरने जितने बड़े–बड़े पाप करता है। महावीर वाणी है– ईमानदारी से पेट भरा जा सकता है, पेटी और कोठी नहीं। समुद्र शुद्ध जल से कहां भरा जा सकता है? सभी गंदे नदी–नाले का जल जब समुद्र में गिरता है, तब कहीं वह भरता है। याद रखना–आदमी पहले तो अमीर होने के लिए बड़े पाप करता है और फिर अमीर होकर और अमीर होने के लिए बड़े पाप करता है और फिर अपनी अय्याशी पर पाप करता है। जीवन एक क्रिकेट है। सृष्टि के स्टेडियम में धरती के विराट पिच पर समय बोलिंग कर रहा है। शरीर बल्लेबाज है। धर्मराज अम्पायर है। बीमारियाँ फिल्डिंग कर रही हैं। यमराज विकेट–कीपर हैं और प्राण विकेट हैं। इस डे नाइट के मैच में हमें रचनात्मकता के जलवे दिखाना है। सांसों के सीमित ओवर में सृजन के रन बनाना है। गिल्लियाँ उड़ने का अर्थ है– सांस का टूट जाना। एल.बी.डब्ल्यू, यानी हार्ट अटैक। दुर्घटना में मरना–रन आउट होना है। सीमा पर शहीद होना कैच आउट कहलाता है और आत्मघात का मतलब हिट विकेट हो जाना है। हत्या का अर्थ स्टम्पआउट होना। हालांकि कुछ आक्रामक खिलाड़ी जल्दी पवेलियन लौट जाते हैं, पर पारी ऐसी खेलते हैं कि कीर्तिमान बना जाते हैं। सबका अपना–रन रेट हैं। जीवन एक क्रिकेट है। भय से बचें। भय का भूत सबसे बड़ा भूत हैं।

नारायण सेवा संस्थान के अन्तर्गत किये गये नियमित निःशुल्क दिव्यांग ऑपरेशन की सूची

क्र.स.	रोगी का नाम	पिता / पति का नाम	उम्र	लिंग	शहर	राज्य
1	सिन्टु	मुकेश	10	पुरुष	अजमेर	राजस्थान
2	अभिषेक	ओमप्रकाश	11	पुरुष	कुरुक्षेत्र	हरियाणा
3	राजु	सीताराम	11	पुरुष	आजमगढ़	उत्तरप्रदेश
4	प्रियंका	दयाराम	12	स्त्री	भिलवाड़ा	राजस्थान
5	दीपक	सतीश	16	पुरुष	कुरुक्षेत्र	हरियाणा
6	पूजा	हरिशचन्द्र	20	स्त्री	वाशीम	महाराष्ट्र
7	इसरार	मो. बीलाल	29	पुरुष	गोण्डा	उत्तरप्रदेश
8	योगेन्द्र	सुदामा	30	पुरुष	कन्नौज	उत्तरप्रदेश
9	रियाज	नजीर अहमद	39	पुरुष	गोण्डा	उत्तरप्रदेश
10	राजकुमार	सतीश	7	पुरुष	वाराणसी	उत्तरप्रदेश

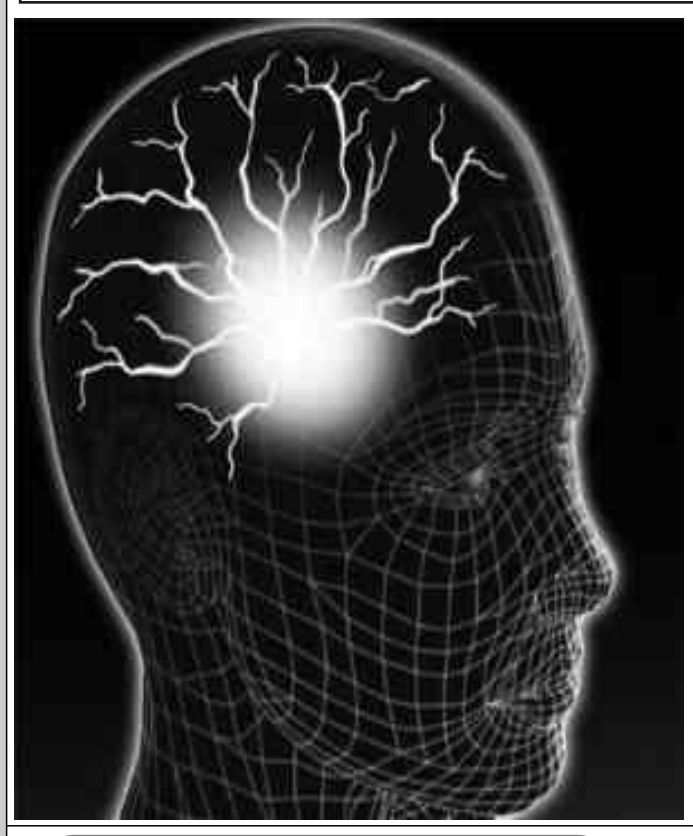

क्रमशः आगे अंक में

मानसिक विकारों का त्याग करें

चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।। (गीता 6 I34)

विचारों को उत्पन्न करने वाली कल्पनाशक्ति मन की सृजनशक्ति है– यदि तुम्हें उत्कृष्ट, स्वस्थ एवं दिव्य–विचार का सर्जन करना है और विशेष विशाल वस्तुओं की रचना करनी है, तो तुम्हें अपनी कल्पनाशक्ति को निर्मल, हितकारक तथा विस्तृत बना लेना चाहिये। जब तुम स्वयं अपने विषय में खोज करने निकलो तो आत्मतत्त्व को समझने में, खोजने में और प्राप्त करने में तत्परतापूर्वक जुट जाओ । तुम दैवी अंशयुक्त सत्, चित्, आनन्द हो। अपने असली स्वरूप को हृदयगम करो। निष्फलता, आधि–व्याधियाँ अधिकांश में निम्न विचारों, दूषित कल्पनाओं के ही फल हैं। अतएव अपने वास्तविक स्वरूप की खोज करते समय कल्पनाशक्ति को पूर्णरूप से निरामय रखने के हेतु तुम्हें भय, क्रोध, तिरस्कार, शंका तथा अन्य दुविधामय मानसिक स्थितियों का परित्याग करना होगा।

सफल प्रशासक के गुण

एकतन्त्र में राज्यव्यवस्था के सभी सूत्र राजा के हाथ में होते हैं और जनतंत्र में लोकप्रतिनिधियों अथवा राजनेताओं के। एक तंत्र में संयोग से अपवादस्वरूप किसी दुर्व्यसनी राजा को छोड़कर शेष की राज्यव्यवस्था श्रेष्ठ रही है। जनतंत्र की तुलना में एकतंत्र में भ्रष्टाचार कम से कम पनपता है। जनतंत्र में भ्रष्टाचार को सर्वथा खतम नहीं किया जा सकता, परन्तु जनतंत्र की यथासंभव कमजोरियाँ दूर कर देने के बाद सर्वजनहिताय और सर्वजनसुखाय के लिए जनतन्त्र ही श्रेयस्कर है। राज्यव्यवस्था में प्रशासकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। सफल प्रशासक को गम्भीर रहना चाहिए। प्रशासक का दानापन पर्दे के ऊपर और पीछे एक जैसा होना चाहिए। प्रशासक को चाहिए कि वह प्रत्येक प्रार्थी को ध्यानपूर्वक सुने और किसी का अपमान न करे। वह विचाराधीन वादों को आवश्यकता से अधिक लम्बित न करे। सफल प्रशासक को मितभाषी होना चाहिए। प्रशासक किसी भी बड़े प्रलोभन के आगे न झुके और न किसी के भी साथ अन्याय करे। प्रशासक की प्रशासनिक क्षमता उसके चेहरे से, उठने–बैठने, चलने और कार्यसम्पादन में स्पष्ट रूप से दिखनी चाहिए। वृथा की शब्दावली से, हँसी–मजाक से और निठल्लेपन से तथा समय का पाबन्द न रहने से प्रशासक का तेज और प्रशासनिक क्षमता घट जाती है। कुछ ले–देकर काम करने से तो प्रशासक लोक नजरों में तेजी से गिर जाता है। चुपड़ी हुई रोटी खाने की तुलना में रूखा खाना श्रेयस्कर है परन्तु कर्त्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी का वह पूर्णरूप से पालन करे। जो सन्तोष और सुख ईमानदारी में है, वह अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं होता। सफल प्रशासक अपनी अधीनस्थ इकाइयों का निरीक्षण अपनी तरह से समय–समय पर करता व करवाता रहे ताकि वे इकाइयाँ किसी भी प्रार्थी का तिरस्कार न कर सकें, किसी के भी साथ अन्याय न करें और नतीजे पर अपने काम को श्रेष्ठ तरीके से सम्पन्न करती रहें।

मुट्ठी में तकदीर

गतांक से आगे...........

कण–कण में है वो ही समाया
दुनिया उसकी माया है।
जब–जब पीर पड़ी भक्तों पर
उसने पार लगाया है।
मान लो उसकी ही प्रभुवर
द्वार हृदय के खोल,
बोल मेरे संग बोल ओ राजन नारायण जय बोल।

जय हो। और इसी क्षण जब हिरण्याकश्यप ने अपना अहंकार नहीं छोड़ा। तब खम्भे में से भगवान नृसिंह जी प्रकट होते हैं। बोलिये नृसिंह भगवान की जय।

तभी खम्भे से प्रकटे प्रभुवर
नृसिंह रूप बनाया था।
अरे चीर दिया हिरण्याकश्यप को
जंघा पर लेटाया था।

छू लिया प्रहलाद को, मीठे–मीठे बोल मेरे संग नारायण जय बोल।

हे, हिरण्याकश्यप–देख न रात है न दिन है, न बाहर है, अन्दर है, ना मैं पशु हूँ, न मैं मनुष्य हूँ। अब सोच ले, तेरे अभिमान का अंत करने के लिए और नृसिंह भगवान ने कहा–हे मूर्ख, तूने धर्म को सताया है। प्रहलाद का अर्थ है धर्म, दया, करूणा, प्यार, मोहब्बत, क्षमा, इन्द्रीय निग्रह। लेकिन ऐ दुष्ट हिरण्याकश्यप, तूने अभिमान के वश में आकर धर्म को सताया है। अब तेरा अंत समय निकट आ गया है और नृसिंह भगवान ने फाड़ दिया। जय हो, बोलिये नृसिंह भगवान की जय।

और ज्योंहि नृसिंह भगवान ने हिरण्याकश्यप का वध कर दिया, उसे चीर दिया। सुबह की वेला, ना शाम की वेला, न घर में न बाहर, न देहरी पर। ऐसा वक्त जहाँ पर हिरण्याकश्यप का अहंकार समाप्त हो गया। बालक प्रहलाद धीरे–धीरे भगवान नृसिंह जी के चरणों में जाकर बैठता है, उन्हें प्रणाम करता है। भगवान नृसिंहजी का क्रोधित रूप, लाल–पीले भगवान नृसिंहजी, आवेश में बहुत ही, मुश्किल था क्रोध पर नियंत्रण करना। परंतु प्रहलाद उनके चरणों में लेटता है, उन्हें प्रणाम करता है और उसका मासूम चेहरा देखकर भगवान नृसिंह उसे आशीर्वाद देते हैं, कहते हैं –भक्त प्रहलाद बोलो, क्या चाहते हो मुझसे ? तो प्रहलाद कहता है–हे प्रभु, मुझे आपसे दो वरदान चाहिये। आईये जानते हैं कौन–कौनसे दो वरदान प्रहलाद ने भगवान नृसिंह से मांगे।

आशीष दिया प्रहलाद को जब नृसिंह भगवान
प्रहलाद करे ये प्रार्थना, मांगू मैं वरदान भगवन्
दुष्ट प्रकृति तात थे, वो थे पापी इन्सान
शोषण, हत्या, कर्म किये, किया धर्म अपमान
अब वे नहीं संसार में, क्षमा करो भगवान।
सद्गति उन्हें प्रदान कर दो मुझे ज्ञान का दान।
प्रहलाद करे प्रार्थना, मांगू मैं वरदान।

हे प्रभु, पहला वरदान मुझे ये दीजिये परमात्मा, मेरे पिता बड़े दंभी रहे। मेरे पिता व्याकुल रहे, मेरे पिता अभिमानी रहे, हे नृसिंह भगवान मेरे पिता ने आपका बड़ा अपमान किया। मेरे चाचा हिरण्याक्ष ने आपके स्वरूप में पधारे हुए नर–नारायण का बड़ा अपमान किया। पर ब्रह्म परमात्मा– मैं पहला वरदान आपश्री से ये मांगता हूं, मेरे पिताजी अब संसार में नहीं रहे। आपके द्वारा उनका वध हो गया। हे परमात्मा, उनके अपराधों को क्षमा करके, उनको अपनी सद्गति प्रदान करो नाथ। मेरे पिता को सद्गति प्रदान करो नाथ। उनकी भूलों को क्षमा करो नाथ। यही वरदान मैं पहला आपसे मांगता हूँ।

क्रमशः.......

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–सोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़